ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in February 2025

हरिप्रकाश राठी की कहानियों में संवेदना

ममता तिवाड़ी, शोधार्थी, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही, राजस्थान
डॉ. रेणुका, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही, राजस्थान

सारांश

मानवीय संवेदना हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि रही है, कोई भी कथा साहित्य महान तभी बनता है, जब उसके पीछे एक विचारात्मक संवेदना हो। कहानी के दूसरे तमाम तत्व जैसे भाषा, शिल्प आदि उसी संवेदना से संचालित होते है, संवेदना के बिना कोई भी कथा रचना महज घटनाओं का सपाट विवरण बनकर रह जाती है। हर साहित्यकार की यह जिम्मेदारी है कि उसका लिखा हुआ जनता तक पहुँचे संवेदना ऐसी अनुभूति है, जो परायों के दर्द को अपना बना देती है। पीड़ा दुसरों को होती है, पर प्राण अपने छटपटाते है। साहित्यिक संवेदना का मतलब है, साहित्यकार की चेतनानुभूति की वह मनोदशा या अवस्था जो उसे रचना करने की प्रेरणा देती है, साहित्यकार जनसामान्य से ज्यादा सहानूभूतिशील और संवेदनशील होता है। "साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का होना बहुत जरूरी है" जिस साहित्य में मानवीय संवेदना नहीं होती उसकी उम्र कम होती है। संवेदना मानवीय व्यवहार की सर्वात्कृष्ट अनुभूति है। हरि प्रकाश राठी एक संवेदनशील कथाकार है, राठी जी की अनेक कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं को छू जाती है। प्रेम के बाद संवेदना ही मानव के अंतराल की सर्वाधिक पवित्र भावना है।

शेखर शर्मा के अनुसार - "संवेदना कृतिकार और सहृदय पक्ष का प्रतिनिधत्व करती है। संवेदना समाज परिवेश और मनः स्थिति के धरातल पर होने वाले सांझे अनुभवों पर निर्भर करती है"। (1)

धीरेन्द्र वर्मा के अनुसा - "संवेदनां हममारे मन की वह कूटस्थ अवस्था है। जिसमें हमें विश्व की वस्तु विशेष का बोध न होकर उसके गुणों का बोध होता है"। (2)

"वैज्ञानिक परिभाषा कोष" में संवेदना की परिभाषा इस प्रकार दी है - संवेदना - मनोविज्ञान, कला, साहित्य, शास्त्र आदि में इन्द्रियों का ऐसा व्यापार जिसकी अनुभूति तो होती है, परन्तु जिसकी अभिव्यक्ति नहीं हो पाती" (3)

परिचय -

हरिप्रकाश राठी की कहानियों में संवेदना एक प्रमुख तत्व के रूप में उभरती है। उनकी कहानियाँ मानवीय भावनाओं सामाजिक सरोकारों और जीवन के सूक्ष्म पहलुओं को बड़ी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं। वे आमजन के दुख.दर्द संघर्ष और उम्मीदों को गहराई से समझते हैं और अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों के हृदय को स्पर्श करते हैं।उनकी कहानियों में करुणा प्रेम सहानुभूति और सामाजिक चेतना का अद्‌भुत मिश्रण देखने को मिलता है। वे अक्सर समाज के हाशिए पर खड़े लोगों की पीड़ा और उनकी मनःस्थिति को बड़े ही सजीव चित्रण के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनकी संवेदनशील लेखनी पाठकों को भीतर तक झकझोर देती है और समाज की जटिल सच्चाइयों से परिचित कराती है। राठी की भाषा सरल सहज और प्रभावशाली होती है जो उनकी संवेदनशील अभिव्यक्ति को और प्रबल बनाती है। उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहती बल्कि पाठकों को सोचने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की प्रेरणा भी देती हैं।

राठी जी की कहानियाँ भी रस भरी जलेबियों की तरह ये कहानियाँ भी संवेदना की चाश्नी में डूबी हुई है। राठी जी अपने दिल से लिखते है। इसीलिए इनकी कहानियाँ जन जन के दिल तक पहुँचती है। संवेदनशील कहानियाँ जन के दिल तक सम्पर्क करती है। कहानियों की इसी शोभा-यात्रा के कारण राठी जी की कहानियाँ जन-जन द्वारा पढ़ी जा रही है। राठी जी की कल्पना शक्ति अति उत्तम है।

'श्री हरिप्रकाश राठी एक संवेदनशील एवं सचेतन कथाकार है। उनकी रचनाएँ समय एवं मानवीय संवेदनाओं का सरल संवाद है, वे किसी वैचारिक अतिवाद से बाधित नहीं है। सभी तरह के अनुभव उनकी कहानियों में रचनात्मकता में बदल जाते है।" (4)

राठी जी के लेखन की विशेषता उनकी रचनाओं के पात्र है, जो उनके अपने परिवेश से लिए गए है कथा के मूल में उनकी प्रमाणिक अनुभूतियाँ है जो कल्पना से रंजित होकर अभिव्यक्त हुई है, उनकी कहानियों में अनुभव का दायरा जितना विस्तृत है, संवेदना का स्तर भी उतना ही गहन और सघन है। उनमें सुख

दुखात्मक अनुभूति के अतिरिक्त मानवीय वेदना भी है। वे अपने पात्रों के साथ ऐसा तादात्मय स्थापित कर लेते है, कि उनकी निजि अनुभूति पात्र अनुभूतियाँ बन जाती है। यह कहानियाँ मानवी संवेदना का चरम है। पाठक इन कहानियों के भाव-वारिधि में गोते लगाते है।

हरिप्रकाश राठी ने स्वयं कहा है कि कहानी की जनस्वीकार्यता कहानी की सबसे आवश्यक शर्त है। संवेदना ही मानव को कहानी से जोड़ती है। वृद्ध जीवन के कड़वे अनुभवों से तो राठी जी की कहानियाँ भरी पड़ी है। इन कहानियों में धनवान घराने के बड़े बुजुर्गों सहित मध्यवर्ग और निहायत ही गरीब तबके वाले बडे-बुजुर्गो के मन को टटोला गया है। कहानीकार की संवेदनशीलता इस बात में है कि कोई भी सहद्धय पाठक इन वृद्ध दम्पत्तियों की बदहाली, पर सजल नयन होकर अश्रपूरित हुए बिना नहीं रह पाएगा ये कहानियाँ जोशो खराम से भरी युवापीढ़ी की अनदेखी के कारण बड़ी तेजी से बुढियाते समाज की और सहानुभूति भरी नजर से देखने का प्रयत्न करती है। वृद्ध विमर्श के फलक पर इन कहानियों का नितांत मौलिक महत्व है।

"आपकी कई कहानियाँ इतनी हद्धयस्पर्शी है कि पढ़ते हुए मेरे आँसू बह गये आपने जिस सहजता एवं साहस से समाज एवं जगत के सत्य को उजागर किया है, वाकई प्रशंसनीय है। कहानियाँ साहित्य के सभी मानदण्डों पर खरी उतरती हुई मन मस्तिष्क को इतना उद्वेलित करती है कि पाठक प्रेरा हुआ-सा सोचने को विवश हो जाता है। इन कालजयी रचनाओं को पढ़कर अभिभूत हूँ। (5)

आमतौर पर समाज में विकलांग वृद्ध, दलित, व्यक्तियों के प्रति हीन दृष्टि पाई जाती है। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'विकलांग' शब्द के बजाए 'दिव्यांग' शब्द प्रचलन में लाने के सार्थक प्रयत्न किया है। वर्तमान साहित्य में इनको दिव्यांग व्यक्ति के रूप में चित्रित करते हुए अनेक साहित्यकारों ने उनकों 'डिसेबल' (अक्षम) की बजाय किसी क्षेत्र विशेष में 'अल्पक्षय' दर्शाकर उनकी अस्मिता का समर्थन किया है। विविध सामाजिक एवं साहित्यिक संरचनाओं से घनिष्ठ संबद्ध कथाकार हरिप्रकाश राठी ने अपनी कहानियों में न्याधानिकरूपेण दर्जन भर दिव्यांग पात्रों की सृष्टि की है।

राठी जी की कहानी 'असली खुराक' में नैरेटर मैं रेलवे टिकट खिड़की पर रात में एक कतार में जाघों तक पांव कटे अपंग व्यक्ति की दीनता का अश्रुदायिक चित्रण है। जहाँ हर एक व्यक्ति उसे लाघंता हुआ टिकट ले-ले कर चला जा रहा है नैरेटर मैं को उसकी सहायता का विचार आता है।

मैने तुरन्त उसके हाथ से प्रमाण-पत्र लिया अपनी जेब से रूपये निकाले एवं मेरे आगे खड़े सभी व्यक्तियों को एक तरफ कर काउन्टर पर आ गया। मेरा रक्त उबल रहा था। आखों में भवानी उत्तर आयी थी। मैं चीखकर बोला अगर किसी की माँ ने दुध पिलाया हो तो इसके पहले आज कोई टिकट लेकर देखें।

इतने शोरगुल के बीच एक भयानक निस्तब्धता छा गयी। काउन्टर क्लर्क को साँप सूंघ गया। मैने लताड़ा जब तक इसका टिकट नहीं बनता, आज कोई टिकट नहीं ले सकता। आप कैसे मुलाजिम है। क्या आपकों यह व्यक्ति दिखाई नहीं देता? मेरी आँखें क्रोध से दहक रही थी। ("असली खुराक") (6)

कथाकार ने एक प्रेरक मिसाल रखी है कि केवल कानून बनाने से नहीं, बल्कि दिव्यांगों के लिए सुविधाओं की पैरवी करने वाले सजग नागरिकों के आचरण से नि-शक्तजन कल्याण कार्यक्रम सार्थक हो सकते है नैरेटर "मैं" को इस पुण्यकर्म का लाभ उसी रात केन्द्रीय निर्माण विभाग द्वारा उसका टेण्डर पास होने के रूप में मिल जाता है। इस प्रकार कथाकार ने शास्त्रोक्त दया-परोपकार भाव को संवेदना से जोड़कर पेशकिया है।

इसी दृष्टि से एक कहानी 'तृप्ति' में राठी जी का संवेदना पक्ष बहुत प्रबल और प्रभावी कहा जा सकता है। तृप्ति कहानी में "कालुआ" भिखारी की करूण कथा का यर्थाथ चित्रण हुआ है। जिसे पढ़कर "कलुआ" भिखारी के प्रति हमारा संवेदना पक्ष जागृत हो जाता है। इस कहानी का अंतिम वाक्य हमें अन्दर तक झकझोर देता है। "भूख ने जिसे वर्षा जिन्दा रखा, तृप्ति ने एक रात की मोहलत भी नही दी"।

कलुआ भिखारी वर्षा से भरपेट भोजन की आशा में जीवन गुजारता है। जब किसी भोज का निमंत्रण आता है और उसी की कल्पना में खो कर पहली बार तृप्ति प्राप्त करता है जीवन में पहली बार भरपेट खाना खाया था। आज पहली बार की वह अपने जीवन में तृप्त हो पाया उसी तृप्ति ने उसे एक रात जीवन जीने की मोहलत नहीं दी।

राठी जी कहानियों में समस्त निशक्त जनः के प्रति संवेदना के कई रूप देखने को मिलते है जिन्हें पढ़कर हमारा संवेदना पक्ष स्वयं ही जागृत हो जाता है। "खडूस" शीर्षक कहानी में एक अपंग मजदुर की जान बचाने के लिए खुद अपाहिज हो चुके फैक्ट्री मालिक मित्तल साहब की बहादुरी का प्रेरक विवरण मिलता है। बचपन से ही गूंगा बहरा एक फैक्ट्री मालिक भीषण अग्निकांड में अपने एक अपंग मजदुर की जान बचा लाया। यह कथानक हमें दिव्यांगों के प्रति संवेदना तथा हमारे नैतिक कर्तव्यों का स्मरण दिलाता है।"(7)

संवेदना का भाव हमें केवल मनुष्य से नहीं जोड़ता है, बल्कि पशु - पक्षियों के लिए भी हमारे मन यह भाव उत्तेजित होता है। राठी जी की कहानियों को पढ़कर भी हमारे मन संवेदना उनके पात्रों के प्रति उत्तेजित होती है। जिनसे हमारा कोई रिश्ता नहीं होता है उनके प्रति भी वह भाव उत्पन्न होता है। राठी जी की कहानियों के पात्र भी दूसरे के दुख में दुःख का अनुभव करते है। तब मन करूणा, दया, आदि भावों से भर जाता है। तब व्यक्ति स्वार्थ भाव त्याग कर किसी के लिए कुछ करने की भावना को जागृत करता है। राठी जी की कहानी "बेटियाँ" में एक पिता का पुत्री के प्रति असीम प्रेम प्रकट किया है। जो बात एक माँ नहीं समझ पाई बेटी के उस दुख को पिता ने बेटी के ससुराल से लौटते ही समझ लिया। समाज में तलाकशुद्धा स्त्रियों के प्रति लोगो की सोच से दुःखी दिव्या आत्महत्या कर अपनी इहलीला समाप्त कर लेती है। यह कहानी पाठक के मन में सैकड़ों प्रश्न छोड़ जाती है। "मायतीत" कहानी में लोभी पुत्रों-बहुओं से दुःखी वृद्ध ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति को ट्रस्ट को दान कर गृहत्याग कर दिया इसी प्रकार विभिन्न कहानियों में धन के लालच में डूबें सम्बंधों का हद्धय विदारक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

वर्तमान समाज में मनुष्य केवल धन के लोभ व लालच में अपनों को दुःख पहुचाते है। वर्तमान में लोभ लालच के कारण शिक्षा एवं संवेदना के परिदृश्य तेजी से बदल रहे है आज की पीढ़ी को ज्ञान के साथ - साथ व्यक्तित्व को उन्नत करने के लिए जीवन मूल्यों का ज्ञान भी आवश्यक है - संवेदना और मानवता की कमी के कारण ही हमारा समाज टूट रहा है। अपनी विभिन्न कहानियों में दुख दर्द और संवेदना से भरा उनका प्रयास सफल रहा है राठी जी की हर कहानी का भाव, रंग और रूप अलग रहा है। प्रत्येक कहानी को सरल व सहज ढंग से लिखा गया है इसीलिए पाठक प्रत्येक पात्र से बंध जाता है।

अटल बिहारी वाजपेयी के अनुसार -

"सुनने वाले और सुनाने वाले के बीच तुम और मैं की दीवार टूट जाती है, जहाँ एकाकार हो जाता है। वही संवेदना की अवधारणा होती है।"

हरी प्रकाश राठी ने अपनी संवेदना एवं सहानुभूति से आत्मसात् कर जिस भी कहानी में घटना विषय एवं व्यक्ति को चित्रित किया है, वह पाठकों के सामने प्रत्यक्ष हो जाता है। इनकी कहानियाँ संवेदना , शिल्प के कारण पाठक के समक्ष खरी उतरती है कुल मिलाकर राठी जी की कहानीयाँ मानव व समाज को संवेदनाओं से जोड़ती है। वर्तमान कथाकारों में हरी प्रकाश राठी का योगदान भी महत्त्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची :-

1. शेखर शर्मा , समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक , पृष्ठ संख्या :- 24-25
2. धीरेन्द्र वर्मा , हिन्दी साहित्य कोष , पृष्ठ संख्या :- 515
3. डॉ. बदरीनाथ कपूर : वैज्ञानिक परिभाषा कोष , पृष्ठ संख्या :- 215
4. वेद व्यास, पूर्व अध्यक्ष , राजस्था साहित्य अकादमी
5. राठौड , मनोहर सिंह , एक बेजोड़ कथाशिल्पी हरिप्रकाश राठी (प्र.स.2021) राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर पृष्ठ संख्या :- 64
6. राठी हरिप्रकाश , असली खुराक , पीढियाँ , राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर , पृष्ठ संख्या :- 101
7. राठी हरिप्रकाश , पीढियाँ , राजस्थानी ग्रन्थागार , जोधपुर , पृष्ठ संख्या :- 112